प्रथम अध्याय

इतिहास का अर्थ एवं स्वरूप विश्लेषण

इतिहास का अर्थ एवं स्वरूप विश्लेषण

सामान्य रूप से प्राचीन घटनाओं, राज्यों सामाजिक व्यवस्थाओं, सांस्कृतिक परिस्थितियों के वर्णन को ही इतिहास कह देते हैं, कहने का तात्पर्य यह है कि विश्व में मानव जाति का आगमन कब हुआ, इस विषय में निर्विवाद रूप से कहना अत्यन्त कठिन है, फिर भी हम यह तो कह ही सकते हैं कि विगत अनेक वर्षों से मानव जाति संसार में दृष्टिगोचर हो रही है, हर युग में मनुष्य किसी न किसी रूप में अपने युग की परिस्थितियों का वर्णन करते रहे हैं। कहीं स्तम्भों के रूप में, कही अभिलेखों के रूप में, कहीं अपने लेखों के रूप में मानव आने वाले युग के लिए कुछ न कुछ अवश्य छोड़ता रहा है। इस प्रकार बीती हुई घटनाएं, परिस्थितयां, राज्य व्यवस्थाएं आने वाले युग के लिए इतिहास बनती है। इन प्राचीन युगों के वर्णन को इतिहास क्यों कहा गया है, इसके लिए हमें इतिहास शब्द का अर्थ जानना होगां सन्धि विच्छेद करने पर इस शब्द का अर्थ इस प्रकार होगा। ' इति+ ह+आस' अर्थात् ऐसा हुआ। इस प्रकार पूर्व युग की सूचनाओं को ही इतिहास माना जा सकता है। इतिहास को सही रूप में समझने के लिए हमें विभिन्न विद्वानों के द्वारा दी गई परिभाषाओं पर ध्यान देना होगां

जी0एम0 ट्रेविलियन के अनुसार –"इतिहास अपने अपरिवर्तनीय अंश में एक कहानी है।"[1] यदि इतिहास को मात्र कहानी ही स्वीकार किया जाये तो इसका स्वरूप और उद्देश्य क्या होना चाहिए। इस विषय में हेनरी पिरेन ने कहा है कि–" इतिहास समाज में रहने वाले मनुष्यों के कार्यों एवं उपलब्धियों की कहानी है।[2]

परन्तु यह परिभाषा भी त्रुटिपूर्ण है, क्योंकि समाज में रहने वाले सभी व्यक्तियों के कार्यो, एवं उपलब्धियों का उल्लेख इतिहास में नहीं होता, क्योंकि अशोक अथवा अकबर कालीन इतिहासकारों ने अपने इतिहास में समसामायिक समाज के प्रति सभी व्यक्तियों के कार्यों एवं उपलब्धियों का उल्लेख नहीं किया है। अतः यह परिभाषा भी अपूर्ण है।

आक्सफोर्ड इंगलिश शब्दकोष के अनुसार इतिहास में किसी देश, समाज तथा मनुष्य से संबंधित घटनाओं का उल्लेख होता है।[3] इतिहास मनुष्य के समाज में जीवन का समाज में हुए परिवर्तनों का, समाज के कार्यों को निश्चित करने वाले विचारों का तथा उन भौतिक दशाओं का, जिन्होंने उसकी प्रगति में सहायता का ही लेखा–जोखा है।[4] डा0 राधाकृष्णन के अनुसार–' इतिहास राष्ट्र की स्मरण शक्ति है। विभिन्न जातियों

एवं राष्ट्रों को अपने खाये गौरव का ज्ञान इतिहास के द्वारा ही प्राप्त होता है और वे पुनरूत्थान के लिए प्रेरणा ग्रहण करते हैं और उन्नति की चरम सीमा को प्राप्त करने में सफल हुए हैं।[5]

यह परिभाषा पूरी तरह सत्य पर आधारित न होते हुए कुछ सत्यता लिए हुए है। के0एम0 मुंशी ने भी इस संदर्भ में लिखा है, " इतिहास मानव के संगठित योग के उत्थान व पतन की कहानी है। ऐसा संगठन अपने आधार के लिए धर्म, जाति एवं भाषा को भी रख सकता है।"[6]

बी0शेख अली के अनुसार–" इतिहास दर्शन है जो अतीत के उदाहरणों से हमें ज्ञान प्रदान करता है। मनुष्य इतिहास का अध्ययन अतीत के उदाहरणों से ज्ञान प्राप्त करने के लिए करता है। उदाहरणतः द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात कोई भी राष्ट्र परमाणु युद्ध की कल्पना भी नहीं करना चाहेगा।[7]

अतः इतिहास का उद्देश्य अतीत के उदाहरणों द्वारा ऐसी शिक्षा प्रदान करना है जो मनुष्य की इच्छाओं और कार्यों का मार्गदर्शन कर सके। कलिंगवुड तथा क्रौचे जैसे विख्यात इतिहासकार भी इस कथन से सहमत है।

डेवी के अनुसार– "अतीत में रूचि, वर्तमान की सुरक्षा तथा सुखद भविष्य के निर्माण के लिए इतिहास का अध्ययन किया जाता है।"[8]

इतिहासकार डेवी की दी गयी परिभाषा उचित प्रतीत होती है क्योंकि मनुष्य चिंतनशील प्राणी है। पशु–पक्षी को भविष्य की चिंता नहीं होती है। परन्तु मनुष्य जो कुछ सोचता या करता है, उसके पीछे भावी पीढ़ी की सुखद भविष्य की कल्पना सन्निहित रहती है। भारतीय मनीषियों ने वेदों, महाकाव्यों तथा इतिहास की रचना सामाजिक सुखों तथा स्वांत सुखाय के लिए नहीं अपितु अतीत की गौरवपूर्ण परम्पराओं को भावी पीढ़ी के सुखद भविष्य के लिए किया है। भारतीय इतिहास में महाराणा–प्रताप, शिवाजी, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद ने अपने जीवन का बलिदान स्वांत सुखाय के लिए नहीं बल्कि भावी पीढ़ी की स्वतंत्रता के लिए किया था। महात्मा गाँधी, लाला लाजपतराय, गोपाल कृष्ण गोखले, सरदार वल्लभपंत भाई पटेल तथा जवाहर लाल नेहरू ने स्वतंत्रता संग्राम के समय जेल की यातनाओं को भावी पीढ़ी के सुखद भविष्य तथा भारत की स्वत्रंता के लिए किया था।

अतः इतिहास निरन्तर गतिशील कालचक्र अतीत तथा वर्तमान को सम्पृक्त करने

वाला एक सेतु है जो अतीत वर्तमान तथा भविष्य के बीच अवरोध को दूर करके भावी पीढ़ी के लिए निष्कंटक मार्ग का निर्देशन करता है।

उक्त सभी परिभाषाओं के अध्ययन के बाद इतिहास को विश्व में रहने वाली विभिन्न जातियों के अतीत का कालक्रमानुसार निष्पक्ष रूप से सप्रमाण किया गया वर्ण के रूप में परिभाषित किया जाता है।

मानव जीवन में इतिहास की उपयोगिता असंदिग्ध है, क्योंकि इसे मानवीय समाज के विकास की कहानी मानते हैं। इतिहास मानव समाज में सत्य तथा न्याय की प्राप्ति के लिए संघर्ष का वर्णन है। अतः इतिहास का अध्ययन अत्यन्त उपयोगी है। प्रो0 शेक अली ने ठीक ही कहा है– " इतिहास की उपेक्षा करने वाले राष्ट्र का कोई भविष्य नहीं होता।[9]

अतः एक राष्ट्र के उत्थान तथा विकास के लिए इतिहास का अध्ययन आवश्यक है। जिस प्रकार एक मानसिक चिकित्सक के लिए रोगी–सम्बन्धी अतीत का ज्ञान आवश्यक है। उसी प्रकार इतिहास के शोधार्थी तथा इतिहासकार के लिए राष्ट्र तथा समाज सम्बन्धी अतीत का ज्ञान आवश्यक है।

इतिहास एक दपर्ण है, जो मानवीय प्रयास को प्रतिम्बिबवित करता है। यह जीवन सम्बन्धी सभी प्रसाधनों से युक्त एक दुकान है जहाँ सभी प्रकार की बौद्धिक सामग्री उपलब्ध है। बुद्धिमान व्यक्ति अपनी जीवनपयोगी वस्तुओं को प्राप्त कर सकते हैं। ज्ञार्नाजन के लिए वैज्ञानिक खिड़की पर जाते हैं पाण्डित्य अथवा विवेक के लिए दर्शन, सत्य तथा आदि शक्ति के ज्ञान के लिए धर्म अथवा अध्यापक के लिए और भौतिक वैभव शक्ति तथा अधिकार के लिए वे युद्ध, विजय, साम्राज्य विस्तार तथा शासकों की निरंकुशता तथा शोषण से सम्बन्धित इतिहास के पृष्ठों का अवलोकन करते हैं। इतिहास ऐसे उदाहरणों से परिपर्णू एक कोश है।

आर0जी0 कलिंगवुड़ ने इतिहास की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए कहा है " मानव जीवन के लिए इतिहास के पाठ बड़े महत्वपूर्ण हैं। कभी– कभी इसकी घटनाओं की पुनराव्रर्त्ति होती है। अतः घटनाओं की पुनरावृर्त्ति रोकी जा सकती है। यह कम से कम इतना तो बता ही देता है कि कौनसी घटना की संभावना है।[10]

सर टॉमस मुनरो ने कहा है–" सम्पूर्ण तत्वमीमांशा की प्रकाशित जिल्दों की अपेक्षा इतिहास के कुछ पन्ने मानव मस्तिष्क को सूक्षम दृष्टि प्रदान करते हैं।[11]

इस प्रकार विभिन्न प्रकार की दी गई परिभाषाओं के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि इतिहास का अध्ययन अतीत की समस्याओं को वर्तमान कालिक समस्याओं के हल करने के लिए एक ऐतिहासिक साधन बन जाता है। अतः इतिहास का अध्ययन मानव समाज के लिए अत्यन्त उपयोगी है। जैसे–

कुछ विद्वानों का विचार है कि विज्ञान की पुनरावृर्त्ति होती है। इसीलिए वह मानव समाज के लिए उपयोगी है। इतिहास में पुनरावृर्त्ति की संभावना नहीं होती इसीलिए यह शिक्षाप्रद नहीं हो सकता। परन्तु यह अवधारणा तर्कसंगत प्रतीत नहीं होती, क्योंकि परिस्थितिजन्य घटनाओं की पुनरावृर्त्ति होती है। फ्रांस में 1830, 1848 की राज्य क्रान्तियाँ परिस्थितियों की पुनरावृर्त्ति का परिणाम थी।

बेकन ने कहा है कि इतिहास मनुष्य को विवेकपूर्ण बनाता है।[12] आर0सी0 एंसर ने लिखा है कि इतिहास विश्व के वर्तमान स्वरूप की पृष्ठभूमि का ज्ञान प्रदान करता है।[13] सर वाल्टेयर रेले का विचार सबसे अधिक महत्वपूर्ण प्रतीत होता है– इतिहास का उद्देश्य अतीत के उदाहरणों द्वारा ऐसा विवेक प्रदान करता है जो हमारी इच्छाओं का मार्गदर्शन कर सके।[14] ए0एल0 राउज ने भी इस बात की पुष्टि की है। उनके अनुसार जो भविष्य था आज वर्तमान है और वर्तमान कुछ समय में अतीत हो जायेगा।।[15]

अलाउद्दीन खिलजी ने राजसिंहासन प्राप्त करने के बाद विश्व विजय तथा सभी के लिए एक धर्म चलाने की योजना तैयार की। सभी लोगों ने उसकी इच्छा तथा योजना का अनुमोदन किया, परन्तु दिल्ली के कोतवाल हाजी मुजीसुद्दीन ने कहा है कि यदि यूनानी सम्राट सिकन्दर महान ने विश्व विजय का स्वपन देखा था तो यथोचित था, क्योंकि उसका परामर्शदाता अरस्तू था। आपके दरबार में वैसे क्षमतावान सलाहकार का अभाव है। यही नहीं, अभी सम्पूर्ण भारत विजय के लिए शेष है। जहाँ तक धर्म चलाने की बात है– शासक का कार्य प्रजा केलिए सुरक्षा, भोजन, वस्त्र तथा आवास का प्रबन्ध करना है। धर्म चलाना नहीं। आपको यदि शासन करना है तो धर्म चलाने के विषय में सोचने का कोई औचित्य नहीं। शासन कार्य छोड़ना पड़ेगा। परिणामस्वरूप अलाउद्दीन खिलजी ने अपनी दोनों योजनाओं का परित्याग कर दिया। उसने अतीत के उदाहरणों से शिक्षा ग्रहण की।[16] इस प्रकार इतिहास अतीत की गौरवपूर्ण देन है।

इतिहास में हमें मानवीय समाज का ज्ञान प्रदान करता है। समाज के स्वरूप, क्रमिक विकास विचारधाराओं का पारस्पारिक संघर्ष, मानवीय स्वभाव प्रगति का विवरण

इतिहास में मिलता है। ए0एल0 राउज के अनुसार– समाज को उच्चतर शिक्षा प्रदान करने के लिए इतिहास का ज्ञान अपरिहार्य है।[17] इसके माध्यम से मानव प्रगति के पथ पर अग्रसर होता है। लार्ड एक्टन ने भी सामाजिक दृष्टिकोण से इतिहास के अध्ययन की उपयोगिता को स्वीकार किया है।[18] मनुष्य इतिहास के माध्यम से अपनी कमजोरियों को जानकर उसमें सुधार करने का प्रयास करता है। कलिंगवुड ने उचित ही कहा है कि यह ज्ञान का स्रोत है। इतिहास ज्ञान का तात्पर्य यह है कि मनुष्य को अपने जीवन को सृष्टि के आरम्भ से जीवित समझता है, क्योंकि प्रत्येक उपलिब्ध की पृष्ठभूमि इतिहास में मिलती है।[19]

व्यवसायिक दृष्टि कोण से इतिहास की अपनी उपादेयता है। यह विश्वविद्यालय स्तर पर अधिक उपयोगी हो जाती है। स्नातकोत्तर परीक्षा के बाद नवयुवकों को पुस्तकालय, संग्रालय तथा संस्थाओं में सचिव के पद पर कार्य करने का अवसर मिलता है। पत्रकारिता के लिए तो इसका ज्ञान आवश्यक हो जाता है। विश्व विख्यात पत्रकार वाल्टर लिपमेन, डी0 डब्लू0 बोगेन सर आर्थर, ब्रियांट की ख्याति का कारण केवल इतिहास का ज्ञान था। प्रशासकीय सेवओं में भी ऐतिहासिक ज्ञान की आवश्यकता होती है, क्योंकि इसके माध्यम से प्रशासक सामाजिक तथा मानवीय समस्याओं को समझने में सक्षम होता है।

अतः इस प्रकार स्पष्ट है कि व्यवसायिक क्षेत्र में कार्य करने के लिए इतिहास के अध्ययन की अत्यन्त आवश्यकता है।

परराष्ट्र (विदेश) मंत्रालय में उच्च पदों के सचिवों, उच्चाधिकारियों एवं विदेश मंत्री के लिए इतिहास का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है। सर नेविल हेंडरसन की पुस्तक (Failure mission) एक उदाहरण है। नेविल हेंडरसन जर्मनी में 1937–39 तक ब्रिटिश राजदूत थे। फ्रेडिक महान तथा बिस्मार्क का उत्कर्ष रक्त एवं युद्ध पिपासु नीति के आवहान पर हुआ। इन तथ्यों का ज्ञान इतिहास से होता है। फलस्वरूप जर्मनी, इटली तथा जापान का उदय हुआ तथा विश्वयुद्ध का विनाशकारी परिणाम हुआ। यही कारण है कि आज अमेरिका को अकेले यूरोप की सुरक्षा का भार वहन करना पड़ रहा है।

सन् 1962 में सीमा–विवाद के कारण भारत–चीन युद्ध की पृष्ठभूमि में चीन की विस्तारवादी नीति रही थी। बर्मा, नेपाल के साथ सीमा–विवाद का कारण चीन की विस्तारवादी नीति थी। भारत तथा चीन के साथ सीमा–विवाद का एकमात्र कारण

परम्परागत विस्तारवादी नीति है। बीजिंग में तत्कालीन भारतीय राजदूत के0एम0 पनिक्कर इन ऐतिहासिक तथ्यों को भली–भाँति इन ऐतिहासिक तथ्यों को भली–भाँति समझ न सके। उन्होंने भारत–चीन मैत्री में अटूट आस्था रखने वाले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू को स्पष्ट स्थिति से अवगत नहीं कराया।

परिणामस्वरूप सीमा–युद्ध में भारत की पराजय तथा चीन का हजारों वर्ग मील भारत भारतीय भूमि पर अधिकार हो गया।

अतः इन तथ्यों को समझने के लिए इतिहास का ज्ञान आवश्यक है। किसी विदेश मंत्री की सफलता उसके इतिहास सम्बन्धी–ज्ञान पर निर्भर है। इस प्रकार राष्ट्र तथा विश्व की कुछ मूलभूत समस्याओं को समझने के इतिहास का ज्ञान अपरिहार्य है।

इतिहास मानवीय कार्यों एवं उपलब्धियों की कहानी के रूप में मनोविनोद का भी साधन है। हेरोडोटस्, लिवि, टेसीटस्, ह्मू, फ्रायड तथा मैकाले की कृतियाँ, साहित्यिक दृष्टि से इतनी रोचक है कि अधिकांश लोग मनोरंजन के लिए उनके साहित्य का अध्ययन करते हैं। ट्रेविलयन ने कहा है– इतिहास मुख्यतः काव्यात्मक है यह एक मकान काव्य की भाँति है जिसका आरम्भ है और न अन्त।[20] डा0 कीटिंग के अनुसार मानव–स्वभाव जगत का यह एक परिचय है। सभी परिस्थितियों में कार्यरत नायकों का अध्ययन है। यह हमारे क्षेत्र को विकसित करता है। इतिहास से यह शिक्षा मिलती है कि अपनी रूचि के महापुरूषों की प्रशंसा एक सीमा के अन्तर्गत रूचि तथा रूचि प्रतिकूल नायकों के प्रति यथोचित न्यायपूर्ण दृष्टिकोण अपनाये।[21] हीगेल के अनुसार मनुष्य इतिहास से वह शिक्षा प्राप्त करता है जो अन्य विषयों में अप्राप्य है।[22]

अन्त में निष्कर्षतः रूप में यही कहा जा सकता है कि इतिहास का अध्ययन मनुष्य को परिपक्व , बुद्धिमान तथा अनुभवी बनाने वाला अत्यन्त उपयोगी विषय है। अतीत की आधारशिला पर वर्तमान का निर्माण करने तथा भावी मार्गदर्शन के लिए इतिहास मनुष्य को सक्षम बनाता है।

आदिकाल से आधुनिक युग तक इतिहास के क्षेत्र में निरन्तर परिवर्तन होता रहा है। इसके विकसित स्वरूप का एकमात्र आधार विभिन्न युगों के सामाजिक मूल्य तथा उनकी सामाजिक आवश्यकताएँ रही हैं। प्रारम्भ में इतिहास चिंतन का उद्गम, अमृत ज्ञान तृष्णा को तृप्त करने के उद्देश्य से हुआ था। इस उद्देश्य से ही प्रेरित होकर प्राचीन इतिहासकारों ने इतिहास का अध्ययन किया।

मानव समाज में विकास की प्रक्रिया निरन्तर रही है। इस विकास प्रक्रिया के साथ–साथ समाजिक आवश्यकताएँ भी विकसित होती रही हैं। समाज से सम्बन्धित इन्हीं प्रश्नों का उत्तर इतिहासकारों ने दिया है। आदिकाल से मानवीय प्रक्रिया का स्वरूप संर्घषमय रहा है। यह उत्थान, विकास तथा पतन की वक्ररेखीय गति ही इतिहास–गति मानी गयी है। इतिहास–न्यायक्षेत्र के अन्तर्गत जब इतिहासकार किसी घटना को क्या है, वह कैसे घटी तथा क्यों घटी? का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अतीत कालिक समाज का पूर्ण चित्रण ही इतिहास का प्रमुख उद्देश्य होता है। किसी भी समाज से सम्बन्धित भौगोलिक दशा, वातावरण, आर्थिक व्यवस्था, राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, प्रशासनिक संवैधानिक कानून, न्याय व्यवस्था, सुरक्षा व्यवस्था आदि का विवरण आवश्यक हो जाता है।

समाज से संबंधित सभी प्रश्न महत्तवपूर्ण है। इतिहासकार से अपेक्षा की जाती है। कि इन सभी विषयों का उचित विवरण समाज के समक्ष प्रस्तुत करे। कितुं समाज का क्षेत्र विस्तृत है तो इतिहासकार के लिए सभी प्रश्नो का उत्तर सम्भव नहीं है। एफ0सी0एस0 शिलर ने इतिहास – क्षेत्र के वर्गीकरण के संवध में कहा है विस्तृत वर्गीकरण दुलर्भ है।[23] कितुं फिर भी इतिहास कारों ने अतीतकामिक घटनाओं के आधार पर सामाजिक प्रश्नों का उत्तर देने के लिए इतिहास के क्षेत्र का वर्गीकरण इस प्रकार किया है।

राजनीतिक संस्थाए समाज की रंगमंच है, जहाँ महापुरूष अपने कार्यो को प्रर्दीशत करते है। सामाजिका जीवन में इसका अधिक महत्तव है। ए0एल0 राउज ने इसे इतिहास की रीढ माना है।[24] जनसाधारण की इस संस्था में युगपुरूष तत्कालीन घटनाओं को नियन्त्रित करने के लिए अपनी इच्छाओं की अभिव्यक्ति करता है। सम्राट अशोक, अकबर महान, महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरू के कार्यो एवं उपलब्धियों का प्रदर्शन राजनीतिक रंगमंच पर ही हुआ है। इन जननायको ने अपने कार्यो के परिवेश के तत्कालीन समाज के भाग्य का निर्माण किया है। इसमें प्रायः युद्ध संधियों तथा क्रांति के नेतृत्व का विवरण मिलता है। परन्तु ये घटनाएँ इतनी महत्त्वपूर्ण होती है कि इनमें तत्कालीन मानवीय समाज की इच्छा निहित रहती है। तथा मानवीय कार्यो पर इसका व्यापक इसका व्यापक प्रभाव देखा जा सकता है। अतीत सम्बन्धी महापुरूषों के कार्यों ,उपलब्धियों, सफलता तथा असफलता से युगपुरूष शिक्षा प्राप्त कर राजनीतिक रंगमंच पर महापुरूषों की जीवनी कार्य तथा उपलब्धियों वर्तमान को प्रकाशित करती है तथा

भविष्य के लिए मार्गदर्शन का कार्य करती है।

अतः निष्कर्ष रूप में यही कहा जा सकता है कि इतिहास के क्षेत्र में राजनीतिक इतिहास का अत्याधिक महत्व है। उदाहरणतः भारतीय स्वत्रंता संग्राम का अध्ययन महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरू, बाल गंगाधर तिलक, गोपाल कृष्ण गोखले की जीवनगाथा के अभाव में अधूरा रहेगा। इन महापुरूषों ने राजनीति के रंगमंच पर ही अपने कार्यों को प्रदर्शित किया है।

इतिहास के क्षेत्र के अन्तर्गत हम सामाजिक जीवन का भी अध्ययन करते हैं, जिसमें धर्म, नैतिकता, रीति–रिवाज, ,खान–पान, आचार, विचार, परम्पराएँ आदि जुड़े हुए होते हैं। ट्रेविलयन ने इसके विषय में कहा है– अतीत में मनुष्यों का दैनिक जीवन, विभिन्न वर्गों का पारस्पारिक सम्बन्ध , परिवार का स्वरूप, गृहस्थ जीवन, श्रमिकों की दशा , मानवीय दृष्टिकोण सास्कृतिक जीवन तथा सामान्य परिस्थितियों से उत्पन्न धर्म , साहित्य, संगीत, शिक्षा तथा साहित्य है।[25] रेनियर के अनुसार सामाजिक इतिहास, आर्थिक इतिहास की पृष्ठभूमि है तथा राजनीतिक इतिहास की कसौटी है।[26] अतः निसन्देह ही इतिहास के क्षेत्र में सामाजिक इतिहास का अत्याधिक महत्व है। भक्ति आन्दोलन के समाज सुधारकों ने भी रामानन्द, कबीर, नानक, तुलसी, राजाराम मोहनराय आदि ने समाज के सुधार के लिए अथक प्रयास किया जिनका सामाजिक इतिहास में महत्वपूर्ण योगदान है।

समाज के प्रारम्भ के साथ ही आर्थिक इतिहास का उदय हुआ है। समाज ने अपनी आजीविका के साधनों को किस प्रकार उत्पन्न किया है।[27] इसका ज्ञान आर्थिक इतिहास प्रदान करता है। बी0 ग्रीस के कथनानुसार–आर्थिक इतिहास का तात्पर्य मानवीय आजीविका के साधनों से है। आजीविका के साधनों के उत्पादन में मनुष्य किस प्रकार प्रयास करके अधिकतम संतोष प्राप्त करता है। वे आर्थिक इतिहास के प्रमुख तत्व होते हैं। विलियम ऐश्ले ने आर्थिक इतिहास के स्वरूप के सम्बन्ध में लिखा है– मनुष्य ने आजीविका के साधनों के उत्पादन में अधिकतम संतोष प्राप्त करने के लिए क्या किया? यही आर्थिक इतिहास है। मनुष्य के रूप में किसी न किसी रूप में संगठन तथा सामुहिकता के तथ्य उसकी गतिविधियों से संचालित है। अतः इस प्रकार स्पष्ट है कि इतिहास के क्षेत्र में आर्थिक इतिहास का अत्याधिक महत्व है।

सांस्कृतिक इतिहास सामाजिक क्षेत्र इतिहास का अभिन्न अंग है। इसके अन्तर्गत

रीति–रिवाज, संस्कार, शिक्षा, साहित्य, वास्तुकला, चित्रकला, संगीत, आमोद–प्रमोद के साधनों का विवरण रहता है। किसी महान सम्राट के शासन–काल को सांस्कृतिक इतिहास का विषय बनाया गया है। वैदिक कालीन, मौर्यकालीन, गुप्तकालीन, हर्षकालीन, अकबर आदि के काल का सांस्कृतिक अध्ययन इस विषय के अन्तर्गत आता है।

अनेक राज्यों के उत्थान तथा पतन के पीछे सैनिक कारण निर्णायक रहे हैं। नैपालियन, हिटलर, मुसोलिनी का उत्थान तथा पतन सैनिक गतिविधियों के कारण हुआ। इस इतिहास क्षेत्र के अन्तर्गत वायु सेना, स्थल सेना, जल सेना के लिए अस्त्र–शस्त्र का निर्माण और उसके प्रयोग का अध्ययन किया जाता है। आजकल अणुबम, परमाणु अस्त्र, प्रक्षेपात्र तथा रसायनिक अस्त्रों का निर्माण मानव जाति के विनाश के लिए किया जा रहा है। मानवता के विरूद्ध परमाणु अस्त्रों के प्रयोग की सर्वत्र निंदा की जानी चाहिए। नागाशाकी, हिरोशिमा तथा वियतनाम में अमेरिका द्वारा परमाणु शक्ति का प्रयोग समाज के लिए कलंक है। दूसरे विश्व युद्ध के समय सर डेनिसनरास ने कहा था कि–"वे दूसरे विश्वयुद्ध के लिए अग्रसर हो रहे हैं। वे कोटि–कोटि के नवयुवकों से बलिदान माँग रहे हैं और वे उनके आदेशानुसार स्वीकार नहीं करेंगे।"[28] इस प्रकार इतिहास के क्षेत्र के अन्तर्गत इन विभिन्न प्रकार के विषयों का अध्ययन अति आवश्यक है, क्योंकि इनके माध्यम मानव समाज का वर्तमान तथा भविष्य का निर्माण होता है।

साहित्य और इतिहास :–

साहित्य के साथ इतिहास का सम्बन्ध जानने के लिए हमें सर्वप्रथम 'साहित्य'का अर्थ समझना अनिवार्य हो जाता है। साहित्य शब्द का व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ इस प्रकार है– हितेन सह– सहितम तस्य भावः साहित्यिक (साहित्य+ व्यस) अर्थात जिससे मानव हित की भावना सन्नित हो उसी को साहित्य कह सकते हैं। प्राचीन भारतीय आचार्यों की मान्यता इस प्रकार की रही है। आचार्य विश्वनाथ ने अपने काव्य शास्त्रीय ग्रन्थ 'साहित्य दपर्ण' के प्रारम्भ में लिखा है–

चतुवर्गफलप्रारितः सुखादल्पधियामपि।
माव्यादेव यतस्तेन तत्वस्वरूप निरूप्यते।।[29]

अर्थात् अल्पवृद्धि वाले को भी सूध से बिना किसी परिश्रम के चर्तुवर्ग अर्थात् धर्म,अर्थ,

काम और मोक्ष रूप की प्राप्ति काव्य (साहित्य) के द्वारा ही हो सकती है। अतः **उसके लिए एक प्रमाण इस प्रकार है :–**

धर्मार्थकाम मोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासुच
करोति कीर्ति प्रीति च साधु काव्य निषेवणम।[31]

अर्थात् सज्जनों के काव्यानुशीलन से धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष एवं विविध प्रकार की कलाओ में कौशल यश एवं आनन्द की प्राप्ति होती है। आचार्य भर मुनि ने भी नाट्यशास्त्र में लिखा है–

दुःखार्चनां शोकार्तान! श्रमात्रनां तपस्चिनाम
विश्रृमाजनक लोक नाटयमेत भविष्यति।[32]

अर्थात् यह नाटक दुखियों को शोक पीड़ितों को श्रृमाशिलियों एवं तपस्वियों को सुख–शान्ति प्रदान करने वाला होगा। साहित्य के प्रति इस भारतीय भावना से यह स्पष्ट हो जाता है कि एक साहित्यकार को समाज के बहुमुखी हित एवं विकास को ध्यान में रखकर ही सृष्टि की ओर उन्मुख होना चाहिए।

भारतीय आचार्यो की साहित्य विषयक इस मान्यता से यह स्पष्ट हो जाता है कि साहित्यकार को समाज से सीधे सम्बन्ध होता है अथवा यों कहिए कि एक साहित्यकार समाज से ही सामग्री ग्रहण करता है और उपयोग की समाज के लिए ही करता है। वस्तुतः एक सच्चे साहित्यकार को उस समाज का पूर्ण ज्ञान आवश्यक है जिससे वह रह रहा है। समाज में प्रचलित परम्पराओं एवं मान्यताओं से परिचित होना साहित्यकार के लिए अनिवार्य है। समाज की दुर्बलताओं विकास श्रेणियों संवेदनाओं एवं अनुभूतियों को सही रूप में समझकर उनका चित्रण करना एक सफल साहित्यकार का दायित्व हो जाता है यदि कोई साहित्यकार अपने समाज में असम्प्रक्त साहित्य की रचना करता है तो उसका साहित्य प्रभावहीन ही रहेगा। अतः एक सफल साहित्यकार को अपने समाज की बहुमुखी प्रगति का ज्ञान होना अत्यावश्यक हो जाता है। समाज की इस पूर्ण प्रगति को समझने के लिए साहित्यकार समाज की इस पूर्ण प्रगति को समझने के लिए साहित्यकार को समाज के इतिहास से परिचित होना भी अत्यावश्यक हो जाता है अतः साहित्यकार का इतिहास से सीधा सम्बन्ध स्थापित हो जाता है।

साहित्य के साथ ही हम इतिहास के विषय में जानकारी नितान्त आवश्यक है। इतिहास शब्द इति+हास से मिलकर बना है, जिसका अर्थ हुआ विगत घटनाओं का

वृतांत। प्राचीन संस्कृत साहित्य में 'इतिहास' शब्द का प्रयोग केवल उसके व्युत्पत्तिलभय अर्थ में ही नहीं हुआ है। महाभारतकार के अनुसार धर्म,अर्थ,काम और मोक्ष से समन्वित पूर्ववृत और कथा ही इतिहास है।

पूर्व वृतं कथायुक्त मितिहास प्रचदाते।[33]

कौटिल्य ने तो स्पष्ट कहा है कि पुराण इतिवृत, आख्यायिक उदाहरण, धर्मशास्त्र और अर्थशास्त्र सब इतिहास है।

पुराणमित्त वृत्त माख्यायिको उदाहरणं, मर्धशास्त्रमर्थ शास चचेतिहास।[34]

साहित्य और इतिहास पृथक–पृथक अस्तित्व रखते हुए भी एक दूसरे से सम्बद्ध हैं। एक साहित्यकार मानव अनुभूतियों मानव संवेदनाओं एवं मानव मनोवृत्तियों का चित्रण करते हुए अपनी साहित्यिक कृति या कथानक तैयार करता है जबकि इतिहास में पूर्व घटनाओं का चित्रण होता है जिनका मूल आधार भी मानवीय चित्रवृत्तियों ही होती हैं वस्तुतः मानव जीवन से सम्बन्धित समस्त साहित्य में कुछ ऐसे तथ्यों , साक्ष्यों मानव मूल्यों का समावेश करता है। जिससे वह साहित्यिक कृति सर्व भौतिक एवं सार्वकालिक धरोहर बन जाती है। साहित्यकार अपनी साहित्य सृष्टि के लिए सामग्री का संग्रह अतीत एवं वर्तमान दोनों ही कालों से कर सकता है। जब वह वर्तमान दोनों ही कालों से कर सकता हे। जब वह अतीत काल से सामग्री ग्रहण करता है तो उसकी रचना से इतिहासकार विद्या सम्बन्ध स्थापित हो जाता है, परन्तु जब वह वर्तमान से सामग्री संग्रह करता हे तो तब भी अनेक प्रसंगों एवं घटनाओं में अतीत का सम्पर्क अनायास ही हो जाता है और इस प्रकार साहित्य और इतिहास का स्वाभाविक सम्बन्ध स्पष्ट होने लगता है। जब कोई साहित्यकार अपनी रचना के लिए वर्तमान से सामग्री न लेकर अतीत ग्रहण करता है तो उसकी रचना ऐतिहासिक कोटि में आ जाती है ऐसे समय में वह ऐतिहासिक पात्रों, तथ्यों एवं घटनाओं के महासागर में से अपने उद्देश्य के अनुकूल कुछ विशिष्ट पात्रों, तथ्यों एवं घटनाओं को चुन लेता है और ऐतिहासिक वातावरण की पृष्ठभूमि में अपनी सुलभ कल्पना द्वारा कथावस्तु का संयोजन करता है।

वस्तुतः इतिहास सुन्दर अतीत की घटनाओं को प्रस्तुत करते हुए मानव को सफल जीवन मार्ग पकड़ने के लिए सचेत करता है। इस प्रकार इतिहास का मुख्य उद्देश्य भी मानव की अतीत सफलताओं को प्रस्तुत करते हुए अपने विवेक के आधार

पर जीवन में प्रवेश करने का अवसर प्रदान करता है इस प्रकार इतिहास से मानव हित स्वाभाविक रूप से ही सम्बद्ध हो जाता है और इस रूप में साहित्य और इतिहास परस्पर और समीप आ जाता है। इतिहास में विचारों तथ्यों और घटनाओं और अनुभूतियों को प्रमुखता मिलती है। डा0 जगदीश गुप्त के अनुसार वास्तव में ऐतिहासिक उपन्यास इतिहास और साहित्य की इस पुरातम समीपता की नूतन समन्वयात्मक अभिव्यक्ति है जिसके पीछे युग–युग के अतीतों मुखी संस्कार निहित है। इसकी उत्पत्ति विगव में आकविस्तार की आन्तरिक मानवीय वृद्धि हुई है।[35]

साहित्यकार साहित्य सृष्टि द्वारा कुछ ऐसे जीवन सत्यों मानव मूल्यों ओर तथ्यों का उद्घाटन करना चाहता है जिनका मानव प्रगति के लिए आवश्यक हो जाता है परन्तु वह उनको सीधे–सीधे न कहकर व्यवहारिक जीवन में सम्पृक्त करके प्रस्तुत करता है जबकि एक इतिहासकार विगत घटनाओं को जीवन सत्यों को ज्यों की त्यों प्रस्तुत करता है। वस्तुतः एक साहित्यकार को उस देश और समाज के इतिहास का ज्ञान होना भी अनिवार्य हो जाता है। जब समाज में रहकर वह साहित्य सृष्टि कर रहा है। साहित्यकार नये युग की प्रगति के लिए प्राचीन घटनाओं को प्रस्तुत करते हुए नये–नये मार्ग सांकेतिक करता चलता है। इस प्रकार एक साहित्यकार इतिहास से सामग्री ग्रहण करते हुए अपनी पसन्द सुरम्य कल्पनाओं द्वारा उनको अधिक सरस, रोचक एवं संग्राहय बना देता है। रामायण एवं महाभारत को आधार बनाकर अनेक साहित्यिक ग्रन्थों की रचना इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं। जयशंकर प्रसाद ने भी सम्पूर्ण प्राचीन भारतीय वाड्मय को भारत के प्राचीन इतिहास का मूल स्त्रोत माना है। इसी कारण उन्होंने वैदिक एवं पौराणिक ग्रन्थों का अध्ययन किया और इस अध्ययन के आधार पर उनकी यह धारणा बनी कि मानव सृष्टि से पहले भारत में देव–सृष्टि थी।[36]

एक साहित्यकार से सामग्री ग्रहण करता है तो कभी–कभी इतिहासकार को भी साहित्यिक रचना सामग्री उपलब्ध करानी पड़ती है। हमारे वैदिक साहित्य वेद सात्यि वेद उपनिषद आदि ग्रन्थों से प्राचीन इतिहास को तैयार करने के लिए सामग्री ग्रहण की गई है। रामायण और महाभारत में साहित्य और इतिहास का अनूठा सम्मिश्रिण देखा जा सकता है। इन दोनों ही महाकाव्यों में इतनी लौकिक एवं अलौकिक तथा पौराणिक कथाएँ भरी पड़ी हैं कि उनमें से ऐतिहासिक तथ्य निकाले जा सकते हैं। यद्यपि इन पर ज्यों की त्यों विश्वास नहीं किया जा सकता फिर भी इतना तो कहा ही जा सकता है

कि इनकी मूल कथाएँ अवश्य ही ऐतिहासिक पात्रों एवं घटनाओं पर आधारित रही होगी। यह दूसरी बात है कि लौकिक अलौकिक घटनाओं के इस अनूठे सम्मिश्रिण से अब मूल अनुसंधान करना और उसको ऐतिहासिक कसौटी पर कसना एक कठिन कार्य है, परन्तु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि इन ग्रन्थों में इतिहास ओर साहित्य का अत्यन्त ही सुन्दर सम्मिश्रिण हुआ है। प्रसाद का मत था कि, इतिहास का अनुशीलन किसी की जाति को अपना आदर्श संगठित करने के लिए अत्यन्त लाभदायक होता है, क्योंकि हमारी गिरी दशा को उठाने के लिए हमारे जलवायु के अनुकूल जो हमारी अतीत सभ्यता है उससे बढ़कर उपयुक्त और कोई भी आदर्श हमारे अनुकूल होगा कि नहीं इसमें पूर्ण संदेह है।[37]

इसी कारण वे प्राचीन संस्कृत वाड्मय के साथ–साथ जैन एवं बौध ग्रन्थों का अनुशीलन करते हुए इस अगाध सागर में बिखरी हुई ऐतिहासिक सामग्री को साहित्य के माध्यम से प्रकाश में लाना चाहते थे। इसके दो कारण थे एक तो भारत में प्राचीन वाड्मय में वर्णित ऐतिहासिक इतिवृत्तों को पौराणिक गाथा था। कपोल कल्पित कथाएँ कहकर उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाता था और दूसरा कारण यह था कि अनेक देशी एवं विदेशी विद्वान सम्पूर्ण प्राचीन साहित्य को पारलौकिक विषयों से सम्बन्धित मानकर ऐतिहासिक दृष्टि से इनका कोई महत्व स्वीकार नहीं करते थे। जबकि तथ्य यह है कि इस सम्पूर्ण वाड्मय में भारत के प्राचीन इतिहास की सामग्री प्रचुर मात्रा में पड़ी है।

आज के वैज्ञानिक युग में ऐतिहासिक सामग्री को आधार बनाकर साहित्य सृष्टि करना अधिक विश्वसनीय एवं प्रभावकारी हो सकता है जब कोई साहित्यकार इतिहास से सामग्री लेकर अपनी सशक्त कल्पना द्वारा मानव कल्पना द्वारा अनुभूतियों का उपयोग करते हुए रचना करता है तो पाठक को यह विश्वास हो जाता है कि हम केवल कल्पना जगत में विचरण नहीं कर रहे हैं। अपितु सत्य घटनाओं का अनुभव कर रहे हैं। इस प्रकार ऐतिहासिक सामग्री जब ऐतिहासिक रस के साथ प्रस्तुत की जाती है तो वह अधिक रूचिकर और विश्वसनीय हो जाती है। इस दृष्टि से इतिहास उपयोग साहित्य के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो होता है। जब एक साहित्यकार ऐसे समाज एवं पात्रों का तथा घटनाओं का चित्रण करता है जो आज उसके सामने आती है तो पाठक की जिज्ञासा वृत्ति अधिक सजग हो जाती है और पाठक के लिए साहित्यिक रचना की सामग्री अधिक संग्राहा हो जाती है। यद्यपि एक साहित्यकार इतिहास को ज्यों

का त्यों ग्रहण नहीं कर सकता जिसमें कुछ प्रमुख पात्र ऐतिहासिक होते हैं। परन्तु इस कथानक में वह अपनी भावनाओं को कल्पना के सहारे माँस और रक्त का समावेश करते हुए उसे सजीवता प्रदान करता है। इस ऐतिहासिक रचना में कथानक का बाह्य आकार ही ऐतिहासिक घटनाओं में निर्मित होता है। उन घटनाओं को परस्पर सम्बद्ध करने के लिए और कथा सूत्रों को जोड़ने के लिए साहित्यकार अपनी कल्पना का ही सदुपयोग करता है। इस प्रकार ऐतिहासिक उपन्यास अथवा नाटक भी इतिहास नहीं कह सकते उनमें केवल मुख्य आधार ऐतिहासिक घटनाओं का होता है। समग्र रचना की तो पूर्ति तो कल्पना द्वारा ही होती है। रचनाकार नवीन पात्रों की भी कल्पना भी कर सकता है। छोटी–मोटी घटनाओं की अवतारणा कर सकता है। इस प्रकार वह ऐतिहासिक सामग्री को अपनी कल्पना के सहारे एक सशक्त साहित्यिक रचना का रूप प्रदान कर देता है। कुछ ऐतिहासिक रचनाएँ ऐसी होती हैं जिनका आधार इतिहास नहीं होता तथापि साहित्यकार अनेक स्थलों पर इतिहास का उपयोग कर लेता है जैसे कहीं दो पात्र परस्पर वार्तालाप करते हुए अशोक एवं गौतमबुद्ध का उदाहरण देने लगते हैं, तो कहीं राष्ट्रभक्ति के प्रजनों में चन्द्रगुप्त और समुन्द्रगुप्त का प्रसंग आ जाता है। कहीं–कहीं अपने देशवासियों में अपनी प्राचीन संस्कृति के प्रति आस्था एवं विश्वास उत्पन्न करने की दृष्टि से साहित्यकार अतीत का चित्रण करने लगता है। अनेकों प्रसंगों की पूर्णता के लिए मानव मूल्यों एवं आदर्शों की स्थापना के लिए वह प्राचीन प्रसंगों की पूर्णता के लिए मानव मूल्यों एवं आदर्शों की स्थापना के लिए वह प्राचीन प्रसंगों का उदाहरण प्रस्तुत कर देता है। कहीं–कहीं वह देशप्रेम और राष्ट्रप्रेम भक्ति के प्रसंगों में इतिहास के पन्नों से सामग्री ग्रहण करने लगता है। इस प्रकार एक साहित्यकार को समय–समय पर इतिहास के उपयोग की आवश्यकता पड़ती रहती है जिसका वह भरपूर उपयोग करता है। वस्तुतः साहित्य और इतिहास का अत्यन्त स्वाभाविक सम्बन्ध है, क्योंकि दोनों ही वर्तमान को ठीक समझने के लिए अतीत की आवश्यकता होती है।

अतः कोई साहित्यकार भले ही वर्तमान समय से सामग्री ग्रहण करे उसे अनायास ही इतिहास से सामग्री लेनी पड़ती है। कहीं साहित्यकार इतिहास का उपयोग करता है तो कहीं इतिहासकार साहित्य का। इस प्रकार दोनों ही दोनों के लिए उपयोगी और दोनों का एक दूसरे से आश्रय से सम्बन्ध होता है।

डा0 सत्यकेतू विद्याशंकर के शब्दों में–' वैदिक संहिताओं एवं वैदिक ग्रन्थों में

जिस तरह ऐतिहासिक संकेत मिलते हैं। वैसे ही इतिहास पुराणों में अनेक ऐतिहासिक वृत्त भरे पड़े हैं।[38]

डा0 मजूमदार भी तथ्य का उद्घाटन करते हुए लिखते हैं कि भारत की प्राचीन परम्पराएं भारत के प्राचीन साहित्य में सुरक्षित हैं, इनमें से विशेष उल्लेखनीय पुराण है, जो ईसा की छठी शताब्दी से पूर्व में इतिहास को जानने के लिए मूल स्त्रोत है। साथ ही पूर्ववर्ती काल में जो बौद्ध एवं जैन साहित्य लिखा गया है। वह भी पुराणों में विद्यमान इतिवृत्तों के संशोधन एवं पूरक ग्रन्थों के रूप में महत्वपूर्ण है। इतना ही नहीं अन्य साहित्यिक ग्रन्थों, व्याकरणों आदि में अत्यन्त महत्वपूर्ण ऐतिहासिक सामग्री विद्यमान है।[39] इस प्रकार इतिहास एवं साहित्य का परस्पर स्वाभाविक घनिष्ठ सम्बन्ध है।

इतिहास के तत्वः–

इतिहास के तत्व से हमारा तात्पर्य उन उपकरणों से है जिनका होना इतिहास में अनिवार्य होता है। इस विषय पर विचार करते हुए इतिहास के उपकरण नाम से श्री कौलेश्वर राय ने इतिहास के चार तत्व माने हैं। काल, व्यक्ति, स्थान और घटनाएँ वस्तुत इतिहास घटनाओं को ही नहीं लेकर चलता वह राजनीतिक, समाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक परिस्थितियों का चित्रण भी करता है। अतः हमारी दृष्टि में इतिहास की उपकरण काल, व्यक्ति, स्थान एवं विषय सामग्री होनी चाहिए।

सर्वप्रथम हम काल पर विचार करते हैं। काल निर्धारण इतिहास का महत्वपूर्ण अंग है। हमारा इतिहास केवल पाँच हजार वर्ष पुराना है। तीन हजार ईसा पूर्व का और दो हजार ईसा के बाद का यद्यपि इस धरा पृष्ठ पर मानव लाखों वर्ष से रह रहा है, परन्तु उसके रहन–सहन के विषय में केवल तीन हजार वर्ष पूर्व तक की ही जानकारी उपलब्ध है। मानव ने कब किस प्रकार रहना प्रारम्भ किया ये काल का विषय बनता है। इतिहास बताता है कि मानव के प्रगति सोपान कितने और किस प्रकार है, जैसे इतिहासकारों ने मानव सभ्यता का इतिहास हिम–युग–पूर्व–पाषाण–युग काँस्य युग और लौह युग में विभक्त कर तैयार किया है। मानव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सदा प्रयत्नशील और नये–नये आविष्कार करता रहा है। प्रारम्भ में वह कच्चा माँस खाकर ही नंगा रहता था, हजारों वर्ष के उपरान्त उसने नये–नये आविष्कार किये। आग को भी ढूँढ़ निकाला। इस प्रकार वह आगे बढ़ता गया, और अपने प्रगति के हर सोपना को इतिहास के काल तत्व के रूप में निर्मित करता गया। कहने का तात्पर्य यह है कि

मानव किस स्थिति में कितने समय तक रहा। इस समय सीमा को प्रस्तुत करना भी इतिहास का विषय है।

द्वितीय तत्व या उपकरण व्यक्ति है, परन्तु इतिहास सभी व्यक्तियों को लेकर नहीं चलता जो व्यक्ति समाज, राज्य या संस्कृति में कोई छाप छोड़ते हैं वे ही व्यक्ति इतिहास पुरूष बन जाते हैं।

वस्तुतः इतिहास पुरूष कुछ विशेष व्यक्ति ही होते हैं। जैसे– सिकन्दर, गौतमबुद्ध, महावीर स्वामी, चन्द्रगुप्त मौर्य, नैपोलियन, अशोक, अकबर आदि व्यक्ति ही इतिहास की कोटि में आते हैं। ये सभी साम्राज्य, समाज या धर्म संस्कृति के निर्माता होते हैं।

इतिहास का तृतीय तत्व स्थान,कोई ऐतिहासिक घटना कहाँ घटित होती है, इसका उल्लेख भी इतिहास में होना अनिवार्य है। इतिहास में राज्य या सामाजिक एवं सांस्कृति घटनाओं का विस्तार से वर्णन मिलता है। इन सबके लिए वर्णन के लिए स्थान का उल्लेख होना उनकी प्रमाणिकता के लिए अनिवार्य हो जाता है। अतः इतिहास का स्थान मुख्य उपकरण है, उसके बिना तो कोई भी घटना विश्वसनीय नहीं रह जायेगी। इसीलिए इतिहासकार स्थान विशेष को आधार बनाकर ही इतिहास लिखते हैं जैसे– भारत का इतिहास, इंग्लैण्ड का इतिहास, जर्मन का इतिहास आदि।

इतिहास का उपकरण– विषय सामग्री एवं घटनावलियाँ, इसी समय स्थान या व्यक्तियों से सम्बद्ध इतिहास लिखा जाता है तो उसमें काल–विशेष,स्थान विशेष, और व्यक्ति विशेष से सम्बन्धित धर्म जिसकी राज्य, घटनाओं का उल्लेख मिलता है। इतिहास का मुख्य विषय है। किसी युग एवं स्थान से सम्बन्धित विभिन्न परिस्थितियों का विस्तार से वर्णन करना ही इतिहास विषय सामग्री बन जाती है।

प्रेम, त्याग, देशभक्ति, परोपकारिता आदि मानवीय आदर्शों से सम्बन्धित आदि महत्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन भी इतिहास में होता है। मीरा भी कृष्ण भक्ति में भाव विभोर रहती थी। सुल्ताना, रजिया बेगम, अबीसिनियन, हब्शी याकूब पर फिदा थी, तुलसीदास भी अपनी पत्नी रत्नावली के दीवाने थे, चरित्रहीन पादरी रासपुटिन रूस के जार निकोलस द्वितीय की पत्नी का प्रेमी था आदि कुछ ऐसी घटनाऐं हैं। सहित्य के अतिरिक्त इतिहास मे महत्व रखती है।

इतिहास देश भक्ति का भी परिचय देता है। फ्राँस की कुँवारी जॉनिड आर्क, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, रानी द्रोपदीबाई, जैतपुर की रानी, रानी अवंतिका बाई लोधी, महारानी तपस्विनी, बेगम जीनत महल आदि कुछ ऐसी वीरांगनाएं हैं जिनके जीवन की घटनाओं का इतिहास में अद्वितीय स्थान है।[40] इस सम्बन्ध में यह ध्यान रखना चाहिए कि साहित्य में भावनाओं को अधिक महत्व दिया जाता है जबकि इतिहास में हर कथा और घटना को बुद्धि से परख कर देखा जाता है। इतिहास समस्त घटनाओं को परखनली में परख रही है ग्रहण करता है। इस प्रकार इतिहास समस्त प्रेम कथाओं, घटनाओं व्यक्तियों के चमत्कारपूर्ण कार्यों को बुद्धि द्वारा परीक्षण करके ग्रहण करता है। वह साहित्य की भाँति भावनाओं को संतुष्ट करने वाली कथाओं को मनोरंजन मात्र समझकर ग्रहण नहीं करता है। यही कारण है कि इतिहास को आधार पर सत्य प्रतीत होता है कल्पना नहीं।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि इतिहास शब्द का अर्थ है, ऐसा हुआ था। अर्थात् प्राचीन घटनाओं, राज्यों, सामाजिक व्यवस्थाओं, सांस्कृतिक परिस्थितियों, धार्मिक उत्थान पतन का व्यवस्थित वर्णन ही इतिहास कहा जा सकता है। यद्यपि इस विषय में इतिहासकारों ने अपने–अपने विचार अभिव्यक्त किये हैं, उन सबका अध्ययन करने के उपरान्त भी यही निष्कर्ष निकलता है कि प्राचीन धर्म, संस्कृति , राज्य, समाज से सम्बन्धित घटनाओं एवं घटनावलियों का बुद्धि परख अध्ययन ही इतिहास माना जा सकता है, मानव जीवन के लिए इतिहास अत्यन्त उपयोगी है, क्योंकि इतिहास के पृष्ठों से ही मानव सामग्री ग्रहण कर अपने जीवन की आधारशिला निर्मित करता है। प्राचीन काल में की गई भूलों की पुनरावृत्ति से बचते हुए लाभकारी सामग्री को ग्रहण करते हुए मानव अपने भविष्य का निर्माण करता है। प्राचीन काल में घटित, धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनीतिक व्यवस्थाओं के परिणामों को भली प्रकार समझकर उनको उपयोगिता की दृष्टि से ग्रहण करते हुए मानव जाति के कल्याण की सम्भावनाओं की पृष्ठभूमि तैयार करता है। विभिन्न इतिहासों के अध्ययन से यह भी स्पष्ट हो जाता है कि इतिहास का अवधारणा का स्वरूप स्थिर नहीं हो सकता, अपितु अपरिवर्तनशील एवं गतिमान ही माना जा सकता है। उसमें परिस्थितियों के अनुसार ही

परिवर्तन होते रहते हैं। जैसे प्रारम्भ में मनुष्य के चिन्तन में संकीर्णता की भावना के कारण राष्ट्रीयता जातीयता और क्षेत्रीयता का अधिक्कय था, किन्तु वर्तमान में सतत् प्रयास और निरन्तर चिंतन के परिणामस्वरूप इतिहास की अवधारणा मानव समाज के हित और कल्याण से सम्बद्ध हो गयी है, और आज विज्ञान और इतिहासकार विश्वबन्धुत्व के सिद्धान्त में विश्वास होने के कारण समस्त मानव जाति का सर्वागीण स्वरूप प्रस्तुत करने में विश्वास रखते हैं।

अतः केवल कुछ विशिष्ट व्यक्तियों के विशिष्ट कार्यों का वर्णन करना ही इतिहास नहीं है। अपितु एक इतिहासकार से यह अपेक्षा की जाती है कि वह जनसाधारण के कार्यों एवं उपलब्धियों का भी इतिहास प्रस्तुत करें।

इस प्रकार इतिहासकार का दृष्टिकोण अधिक विस्तृत उदार एवं व्यापक हो गया है। एक इतिहासकार को समस्त मानव जाति और उसके क्रियाकलापों को समयानुसार दृष्टि में रखकर ही प्रस्तुत करना चाहिए। इतिहास का साहित्य से भी गहन सम्बन्ध है, क्योंकि दोनों ही मानव की ज्ञान बुद्धि और प्रगति के लिए होते हैं। अतः कोई भी साहित्यकार वर्तमान से सामग्री ग्रहण करते हुए अतीत की उपेक्षा नहीं कर सकता। अतः उसे अतीत की सामग्री के लिए इतिहास का आश्रय लेना पड़ता है। कहीं–कहीं पर प्राचीन साहित्य ग्रन्थों में प्रेम कथाओं को भाव प्रवणता प्रदान करता है। इस प्रकार इतिहास और साहित्य का स्वाभाविक सम्बन्ध है।

एक इतिहास लेखक को कुछ इतिहास के उपकरणों को भी लेकर चलना होता है, क्योंकि इन उपकरणों की विस्तृत विवेचना से ही उसका इतिहास निर्मित होता है। एक इतिहासकार प्रमुख रूप से अपने इतिहास में काल व्यक्ति स्थान और घटनावलियों को स्थान देता है। वह कालानुसार, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक,धार्मिक है, क्योंकि समय एवं परिस्थितियों के अनुसार घटनाओं, धार्मिक व्यवसायों राजनीतिक परिस्थितियों एवं सांस्कृतिक विधि–विधानों में अन्तर आ जाता है।

इतिहास का द्वितीय उपकरण व्यक्ति है, क्योंकि इतिहास सभी व्यक्तियों को लेकर नहीं चल सकता, परन्तु जो व्यक्ति राज्य , समाज या संस्कृति में अपनी अमिट छाप छोड़ते हैं वे ही इतिहास पुरूष बन जाते हैं, यही कारण है कि जूनियर सीजर, सिकन्दर, गौतमबुद्ध, महावीर स्वामी, चन्द्रगुप्त मौर्य, नेपोलियन, अशोक, अकबर, महात्मा गाँधी आदि व्यक्ति हैं, इतिहास की सामग्री बन जाते हैं। इतिहास के तृतीय तत्व के रूप

में स्थान को लिय जा सकता है, क्योंकि ऐतिहासिक प्रमाणिकता के रूप में स्थान का उल्लेख होना भी महत्वपूर्ण है। चतुर्थ उपकरण के रूप में विषय सामग्री को लिया जा सकता है जिसमें व्यक्ति, घटनाएँ, सांस्कृतिक विधि–विधान, राजनीतिक और सामाजिक उत्थान पतन भी सभी को स्थान मिल सकता है। इस प्रकार क्रमानुसार प्राचीन विविध घटनावलियों का वर्णन ही इतिहास है जो व्यक्ति के लिए अत्यन्त उपयोगी है।

*****

संदर्भ–सूची

1. झारखण्ड चौबे,–इतिहास दर्शन, वि0वि0 प्रकाशन, वाराणसी, 2001, पृ0 7 पर उद्धत
2. गोविन्दचन्द पाण्डेय– इतिहास का स्वरूप एवं सिद्धांत, प्रकाशन, जयपुर,1973, पृ0 34 पर उद्धत
3. वही, पृ0 361 पर उद्धत
4. डा0 आर0के0 बंसल– इतिहास लेखन की अवधाराणाएं तथा पद्वतियां, लक्ष्मी प्रकाशन, आगरा, 2005, पृ0 4 पर उद्धत
5. वही, पृ0 5 पर उद्धत
6. पाण्डेय लालता प्रसाद–भारतीय दर्शन, इलाहाबाद,1997, पृ0 6
7. झारखण्ड चौबे–इतिहास दर्शन,पृ0 8 पर उद्धत
8. डर्बी जौह्न– हयूमन एण्ड नेचर एण्डयूमन के डक्टल इन्टोडेक्शन साइकोलॉजी, पृ0 21 पर उद्धत
9. झारखण्ड चौबे– इतिहास दर्शन, पृ0 12 पर उद्धत
10. आर0जी0 कलिंगू– एस ए ऑन द फलास्पिी ऑफ हिस्ट्री, लन्दन, 1965, पृ0 80 पर उद्धत।
11. कोलेश्वर राय, इतिहास दर्शन, किताब महल, राजपथ पटना, 2005, पृ0 20 पर उद्धत
12. झारखण्ड चौबे– इतिहास दर्शन, पृ0 44 पर उद्धत
13. वही, पृ0 45 पर उद्धत
14. डा0 के0एल0 खुराना– इतिहास लेखन तथा धारणाएं तथा पद्वतियां, पृ0 35 पर उद्धत
15. ए0एल0 राउज– द यूज ऑफ हिस्ट्री, पृ0 87
16. डॉ0 झारखण्ड चौबे– पृ0 46 पर उद्धत
17. वही, पृ0 31 पर उद्धत
18. वही, पृ0 37 पर उद्धत
19. डॉ0 के0एल0 खुराना– इतिहास लेखन अवधारणाएं तथा पद्वतियां, पृ0 40 पर उद्धत
20. डॉ0 कोलेश्वर राय–इतिहास दर्शन , पृ0 35 पर उद्धत

21. वही, पृ0 36 पर उद्धत

22. वही, पृ0 56 पर उद्धत

23. वही, पृ0 65 पर उद्धत

24. ए0एल0 राउज– द यूज ऑफ हिस्ट्री, पृ0 881

25. डॉ0 झारखण्ड चौबे– इतिहास दर्शन, पृ0 51 पर उद्धत

26. गोविन्दचन्द्र पाण्डेय– एतिहासिक स्वरूप एवं सिद्धांत, पृ0 81 पर उद्धत

27. डा0 झारखण्ड चौबे– इतिहास दर्शन, पृ0 53 पर उद्धत

28. वही, पृ0 38

29. आचार्य विश्वनाथ– साहित्य दपर्ण, पृ0 35

30. आचार्य विश्वनाथ– भरतमूनि नाट्यशास्त्र, पृ0 24

31. वही, पृ0 24–24

32. महाभारत –अनुवादक नानू व्यास, गीताप्रेस गोरखपुर, 2032, 6/25

33. अर्थशास्त्र– अनुवादक–वाचस्पति गैरोला, सुभारती प्रकाशन, गोपाल मन्दिर वाराणसी, 2006,पृ0 14–15

34. वही, पृ0 67–17

35. डॉ0 जगदीशचन्द्र गुप्त– आलोचना का उपन्यास विशेषांक, पृ0 178

36. जयशंकर प्रसाद– विशाखदत्त की भूमिका, पृ0 153

37. वही, पृ0 156

38. डॉ0 सत्यकेतू विद्यालंकार– भारत का प्राचीन इतिहास, श्री सरस्वती सदन, मसूरी, नई दिल्ली, 2007, पृ0 40

39. डॉ0 आर0सी0 मजूमदार– भारत का वृहत इतिहास भाग–1, मैकमिलन इंडिया लि0, नई दिल्ली, 2008, पृ0 177

40. डा0 भरत मिश्र– 1857 की क्रान्तिकारी महिलाओं का योगदान, पृ0 88